सनातन ऐतिह्य और नजरूल

श्री श्री माँ

"अनमने विराट शिशु लेकर खेल तेरा, निर्जन में प्रलय व सृष्टि पुतली का खेल तेरा" यह विश्व जगत् और जगत्पति उभय ही अनन्त हैं। उनके सृष्टि पदार्थ भी अनन्त हैं। उस असीम अनन्त महाशक्तिमान को प्रकाशित करना किसी का साध्यायत्त नहीं है। वे स्वयं ही स्वयं को प्रकटित करते हैं इसीलिए उनको हम स्वप्रकाश कहते है। उस अनादि अनन्त के स्वभाव को महाप्रकृति कहा जाता है। यह महाप्रकृति ही है आद्याशक्ति महामाया, इस महामाया के प्रभाव से ही यह विश्वचराचर निखिल जगत् सकल सृष्ट हुआ है। यह ही विशाल शिशु स्वरूप जगत् पति का महत् खेल है एवं जगत् है उसका खेल घर। सकल जीव के अगोचर में उनकी सृष्टि-स्थिति-प्रलय का खेल जगत्पति नित्य सुसम्पन्न करते आये है। इस जगत् का खेल जगत्पति के स्वप्रकाश रूप महाइच्छा रूप के स्वभाववशत: अभ्युदय से ही होता है।

काजी नजरुल ईसलाम की रचनाओं में हिन्दु एवं मुस्लिम संस्कृति का समन्वय हुआ है। घर्मान्धता को दूर करने के लिए किसी भी घर्म के संस्कार की तीव्र आलोचना करने में वे दुविधा बोध नहीं करते। घर्मबोध के साथ-साथ मानविकतापूर्ण चिन्तन को, आत्मबोध समन्वित चिन्तन को एवं वैदिक-पौराणिक चिन्ताधारा के सहित उन्होंने अपनी युक्ति को ऐक्यता दी है एवं उन्होंने घर्म के सम्पर्क में उदार मनोभाव का परिचय देते हुए कृष्ण, बुद्ध, ईसा एवं मोहम्मद प्रभृति नवी अवतारों को एकासन पर अधिष्ठित किया है। "एक वह सृष्टा सर्व सृष्टि का, एक वह परम प्रभु, एक से अधिक सृष्टा कहे ना कोई घर्म कभु" - नजरुल। यहाँ महात्मा कबीर के साथ नजरूल का एकमत है। कबीर कहते हैं - "साँई मेरा एक तु और न दूजा कोई, जो साहिब दूजा कहे, दूजे कुल को होई।" "निखिल विश्व तुझमें ही प्रभु तुम ही मम् शरणम् - एकमेवाद्वितीयम्।" - श्री अभयजी।

"मेरे सीमा के बन्धन टुटे, दश दिशा से जायेंगे लुटे, पाताल फोड़कर उतरुँगा मैं, उठुँगा मैं आकाश भेद कर, विश्व जगत् देखुँगा मैं हाथों की मुट्ठी में लेकर" - सर्वनियन्ता महाकाल का कालचक्र, जन्ममृत्यु का रहस्य भेदन एवं सत्यदर्शन, आत्मदर्शन और सर्वव्यापी जीवन दर्शन - इन सकल विषयों के कारण के खोज की चेतना जागृत होती है कुछ दार्शनिक महात्मनों के हृदय में। आत्मविद्या लाभ व इस साधना में निमग्न होकर सत्ता में चैतन्यमय जागरण होता है। तभी सत्ता मध्य प्रबुद्ध होता है ध्रुव तत्व का स्फुरण। इस अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में महाकाल की कर्त्री महाशक्ति स्वरूपिणी महाकाली होती है सृष्टि-स्थिति-संहार की अधिष्ठात्री देवी "माँ"। "सिन्धु में माँ का बिन्दु रूप छिटका माणिक्य समान, विश्व में माँ का रूप परिव्याप्त है इसीलिए माँ दिक्भुवन" - अखण्ड स्वप्रकाश ज्योतिर्मय असीम गगनसदृश परम व्योम से खंड-खंड रूप धारण कर ज्योति-बिन्दु धारा समग्र ब्रह्माण्ड में पतित होती है। वह ही सृष्टि का आदि-अन्त स्थान है। यह चित् अणुसम चैतन्य बिन्दु समुहादि ही होते है आनन्दमयी के प्रकृत स्वरूप। वह कालगंडी में पतित होकर (चित्-अणुसम बिन्दु-दल) वैचित्र्यता लाभ करती है। आद्याशक्ति माँ महामाया कालीरूप में काल को नियंत्रित करती है - माँ के चार हाथों में चार युगों की खंजरी, नृत्य ताल पर नित्य उठे रंजनी।" "काली कन्या के पदतल में देखो आलोक नाचन, शिव करते है हृदय निछावर रूप देखकर, जिनके हाथों में है जनम-मरण।" - काल के मध्य में ही समग्र विश्व का विवर्तन होता जा रहा है। इस प्रचंड कालगति को शान्त कर सकती है एकमात्र महाकाली। यही है अखण्ड काल शक्ति रूपी "काली कन्या" अथवा "कालो मेये"। यह ही प्राण चैतन्य के शान्त स्थिर अवस्था की अधिष्ठात्री शक्ति हैं। पराचैतन्य स्वरूप शिव अवश चैतन्य होकर महाकाली के पदतल में शायित हैं। शिव ही प्राण चैतन्य की चंचल प्रकृति अवस्था में जीव चैतन्य स्वरूप निम्न प्रकृति सम्पन्न जीव हैं। फिर प्राण चैतन्य की स्थिर अवस्था में जीव चैतन्य ही शिव चैतन्य में रूपान्तरित होता है अर्थात् जीव ही फिर शिव हो जाता है। चैतन्य की भाव स्वरूप इच्छारूपी प्रकृति हुई "माँ" इस कारण "स्थिर होकर बैठो माँ मेरी आँख के आगे, देखुँगा मैं नित्यलीलामयी स्थिर होने पर तु कैसी लागे?" "देखुँगा तु कैसी जननी साकारा ना निराकारा, कैसे काली होकर उतरे ब्रह्मज्योतिधारा।" - "माँ का रूप क्या होता है, वह, जो चाँद तारों में फैला है, होती है माँ के रूप की आरती नित्य सूर्य का प्रदीप जलाकर।" आत्मतत्व में करने से रति, उससे होती है शुद्धमति, यह ही है प्रकृत "आरती"। हृदय कमल प्रस्फुटित होने पर आत्मसूर्यसम ज्योति का प्रकाश अन्तराकाश में सुविस्तृत होकर प्रतिभात होता है। आत्मसूर्य ही है आत्मज्योति; यह नित्य ज्योति है। इसलिए कवि कहते है, "नित्य सूर्य प्रज्वलित कर" अथवा (नित्य सूर्य प्रदीप ज्वालि) माँ की आरती की जाती है। इस आत्मज्योति के मध्य ही आद्यामहाशक्ति का पूर्ण विकास होता है। यह महाज्ञान की ज्योति है। विशुद्ध परमज्ञान के आलोक से साधक हृदय अखंड ज्ञान की धारा में प्लावित होते है; तब साधक महाप्रज्ञा में प्रतिष्ठित होते हैं। इस अवस्था में माँ का आह्वान या विसर्जन कुछ भी नहीं है। "इस बार नवीन मंत्र से जननी होगा तेरा उद्बोधन, नित्या होकर रहोगी जब, नहीं होगा तेरा विसर्जन।"

-हिन्दी अनुवाद - श्रीमती सुशीला सेठिया